International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 515-517

International Journal of Applied Research

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 515-517
www.allresearchjournal.com
Received: 18-04-2015
Accepted: 20-05-2015

रोशन कुमार
शोधार्थी हिन्दी विभाग बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

Correspondence:
रोशन कुमार
शोधार्थी हिन्दी विभाग बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, बिहार

आधुनिक हिन्दी की 'लम्बी कविता'

रोशन कुमार

शोध सारांश - छायावाद युग में अपने परम्परा से अलग हटकर एक अन्य प्रकार की कविता लिखी जानी लगी , जिसे लोगों ने ष्लंबी कविताष की संज्ञा दी। लम्बी कविता नये प्रकार के काव्य रूप में हमारे समाने आया। है। स्वातंत्र्योत्तर परिस्थिति में मानव को जिन मोहभंग, निराशा, ऊब, घुटन आदि को झलने पड़ा और इससे उनको जिन यातनाओं एवं वेदनाओं से गुजरना पड़ा है उसकी अभिव्यक्ति है ष्लम्बी कविताष इसमें हम ष्लम्बी कविताष का स्वरूप और परम्परा को देखेगें।

प्रस्तावना-

हिन्दी साहित्य के छायावाद युग में अपने परम्परा से अलग हटकर एक अन्य प्रकार की कविता लिखी जानी लगी , जिसे लोगों ने ष्लंबी कविताष की संज्ञा दी। ष्लम्बी कविताष एक नये-काव्य प्रकार के रूप में मुक्तिबोध की मृत्यु के बाद उन्हीं की कविताओं पर विचार करने के क्रम में आस्तित्व में आई। ष्लम्बी कविताष पर विचार करते हुए रमेश कुंतल मेघ ने लिखा है-श्समकालीन लम्बी कविताएँ ष्तराशीष हुई कथाएँ नहीं हैय प्रत्युतः देश एसमाजए मनुष्य और व्यक्ति की खंड़-खंड़,पट-पट,गड्ड-मड्ड गाथाएं है।श ष्अंधेरे मेंष कविता पर टिप्पणी करते हुए डॉ. रामदरश मिश्र ने कहा है कि श्लम्बी कविता का कोई पूर्वनिश्चित प्रतिमान नहीं होता। वह समकालीन जीवन संघर्षों की अभिव्यक्ति के संदर्भों में स्वयं रूपायित होती है।श्डॉ. बलदेव वंशी ष्लम्बी कविताष के उदय के बारे में लिखते हुए कहा है श्आधुनिक जीवन बोध के अतिशय दबाव में हुए अनिवार्य़ वृहत्तर परिवर्तनों के कारण लंबी कविताओं का उदय हुआ।.....लम्बी कविता अपनी प्रकृति, रूप और चरित्रगत विशिष्टताओं में सयंत, बहुआयामी, व्यापक दृश्यपलक लिए हुए प्रदीर्घ ऐसी रचना है, जो विचार –दृष्टि एवं संवेदनात्मक धरातल पर परिवेश से वृहत्तर सरोकार रखता है।श रघुवीर सहाय की कविता ष्आत्महत्या के विरुद्धष पर विचार करते हुए डॉ. माहेश्वर ने लिखा .श्लंबी कविता आधुनिक जीवन की गहरी संश्लिष्ट तथा जटिल, किन्तु आकुल छटपटाहट की काव्याभिव्यक्ति है।श[4]

कुल मिलाकर ष्लम्बी कविताष का विकास वैयक्तिक एवं सामाजिक निराशा, कुण्ठा एवं हताशा के लंबे संघर्ष के साथ-साथ हुआ है। इसमें जीवन की यातनाग्रस्त दारूण स्थितियों का वर्णन है।स्वातंत्र्योत्तर परिस्थिति में मानव को जिन मोहभंग, निराशा, ऊब, घुटन आदि को झलने पड़ा और इससे उनको जिन यातनाओं एवं वेदनाओं से गुजरना पड़ा है उसकी अभिव्यक्ति है ष्लम्बी कविताष

लम्बी कविता के स्वरूप निर्धारण में सबसे पहला सवाल उसके ष्नामकरणष से जुड़ा हुआ है।क्या कविता केवल लम्बी होने से उसे ष्लम्बी कविताष के श्रेणी की कविता कही जाना चाहिएघ इस पर विद्वानों का एक मत नहीं है। कुछ विद्वान उसके आकार की दीर्धता के आधार पर लम्बी कहना पसंद करते है ,कुछ विद्वान उसके अख्यान या कथागत आधार के मद्देनजर उसे प्रबंधात्मक या कथात्मक कविता कहते है। डॉ. नरेन्द्र मोहन का कहना है कि श्लम्बी कविताओं की रचना पद्धति का प्रश्न, अन्ततः इनकी अन्विति के स्वरूप से जुड़ा है। लम्बी कविता ऊपर से विश्रृंखल और अराजक हो सकती है ,पर भीतर से संगठित हो सकती है।.....वैसे विम्ब और विचार का तनाव लम्बी कविता की संरचना का मूल आधार है।श

लम्बी कविता के स्वरूप निर्धारण में दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है-नाटकीयता। नरेन्द्र मोहन ने लिखा है-श्लम्बी कविता के रचना विधान का अनिवार्य लक्षण है-नाटकीय।इसके बिना आज के जीवन की अन्तर्विरोधों से भरी स्थितियाँ उजागर नहीं हो सकती।स्थितियों के पीछे की स्थितियों,व्यवहारों मानसिक-आत्मिक क्रियाकलापों

को अभिव्यक्ति करने के लिए नाटकीय विधान को लम्बी कविता को अनिवार्य संरचना माना जा सकता है।श

लम्बी कविता के स्वरूप निर्धारण में ष्सर्जनात्मक तनावष की भी विशेष भूमिका है। जब सर्जनात्मक तनाव दीर्घकालीन हो तथा विस्तृत फलक पर अपनी क्रियात्मकता सिद्ध कर सकता हो । इसके लिए यह जरूरी है कि लम्बी कविताओं में सर्जनात्मक तनाव के विविध रूप से स्तर और धरातल विद्यमान रहे।लम्बी कविता का तनाव एक आयामी नहीं होता।

लम्बी कविता की विषय-वस्तु का आधार पौराणिक ,अर्द्धऐतिहासिक, ऐतिहासिक, समसामयिक और काल्पनिक में से कुछ भी हो सकता है। लम्बी कविता के वस्तु के बारे में कोई निश्चित नियम नहीं है। यह कवि की प्रकृति ,रूचि और सृजनात्मक आवश्यकता पर निर्भर करती है।

अब प्रश्न उठता है कि आधुनिक हिन्दी की प्रथम ष्लम्बी कविताष किसे माना जाए।इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। छायावाद युगीन लम्बी कविता पर अगर हम विचार करें तो आकार और कालक्रम की दृष्टि से सुमित्रानंदन पंत की कविता ष्परिवर्तनष (1924) सबसे पहली ष्लम्बी कविताष की श्रेणी में आती है। छायावाद युगीन अन्य लम्बी कवितां में प्रमुख है- जयशंकर प्रसाद की ष्प्रलय की छायाष (1933) निराला की ष्तुलसीदासष (1934)ए ष्सरोज स्मृतिष(1935)ए ष्राम की शक्तिपुजाष (1936), आदि।

डॉ.प्रभाकर क्षोत्रीय ने ष्परिवर्तनष को अपनी ऐतिहासिक महत्ता देते हुए कहा है-श ष्परिवर्तनष प्रलंब कविता का पहला पत्थर है-बुनियाद का पत्थर नहीं।श[7] हिन्दी की ष्लम्बी कविताष की शुरूआत के संदर्भ में विचार करते हुए डॉ. बलदेव वंशी ने कहा है कि श ष्परिवर्तनष अपने अंश-अंश खंड़ित कथ्य को लेकर, जो पृथक-पृथक कविताओं सा लगता है, वैचारिक तारतम्य को बनाये न रख सकने की असमर्थता में प्रथम लंबी कविता नहीं मानी जा सकती।श डॉ वंशी ने राम की शक्तिपुजा को प्रथम लम्बी कविता माना है। छायावादी दौर में रचित लम्बी कविताओं को राजीव सक्सेना ने लघु-खंड़ काव्य (मतान्तर,मार्च 1970) कहा है। नरेन्द्र मोहन इस पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है- श्ये कविताएँ लघु-खंड़ काव्य नहीं लम्बी कविताएँ ही है। ये कविताएँ लम्बी कविता के पहले और प्रारंभिक दौर को सूचित करती है। इन कविताओं की बनावट में प्रबंधात्मकता का झीना – सा आभास बेशक हो पर इन कविताओं को प्रबंधात्मक काव्यों के तौर पर या महाकाव्यात्मक कविताओं के रूप में देखना उचित नहीं है। ज्यादा सही होगा इन कविताओं को लम्बी-कविताओं के रूप में देखना।श [8] डॉ. रमेश कुन्तल मेघ का कहना है श्लम्बी कविता विधा की समकालीन तथा सार्थक शुरूआत निराला की राम की शक्ति पुजा से हुई और इसके समारम्भ मुक्तिबोध के अंधेरे में से हुआ।श डॉ. मेघ यह कहते हुए प्रलय की छाया तथा परिवर्तन जैसी कविताओं को ध्यान में नहीं रखा है।

छायावादी लम्बी कविताओं और बाद की लम्बी कविताओं में मुख्य अंतर यह है कि छायावादी कविताओं में आख्यानपरकता, कल्पना की उड़ान है जबकि बाद की लम्बी कविताओं में आख्यान मुख्य नहीं है,वह प्रतिआभास करता है-केंद्रीय बिम्बों-प्रतीकों और विचारों को।

लम्बी कविताओं के क्रमिक विकास को काल खंड़ के अनुसार हम चार भागों में बाँट सकते है- (क)छायावाद युगीन लम्बी कविता(ख)प्रगतिवाद युगीन लम्बी कविता (ग)प्रयोगवाद युगीन लम्बी कविता (घ)समकालीन लम्बी कविता।

डॉ. हरदयाल ने मौटे तौर पर आधुनिक काल में लिखी गई लम्बी कविताओं को दो वर्गों में रखा है-

;1द्धआख्यान श्रेणी की लम्बी कविताएं (2) आख्यान हीन लम्बी कविताएँ

पहले वर्ग में आने वाली लम्बी कविताओं में प्रलय की छाया (प्रसाद) राम की शक्तिपूजा (निराला) असाध्यवीणा (अज्ञेय) तथा दूसरे वर्ग के प्रतिनिधि लम्बी कविताओं में परिवर्तन (पंत) मुक्तिप्रसंग (राजकमल) लुकमानअली (सैमित्रा मोहन) अंधेरे में (मुक्तिबोध) है।

नामवर सिंह ने काव्य रचना की दृष्टि से लम्बी कविताओं को दो वर्गों में रखा है-पहला प्रगीतात्मक दूसरा नाटकीय।उनकी दृष्टि में प्रगीतात्मक लम्बी कविता की संरचना वर्तुलाकार और भावबोध, आत्मपरक व अनुभूति प्रधान होता है।इसके उदाहरण में बतौर उन्होंने अज्ञेय की लम्बी प्रगीत्मक कविता ष्असाध्यवीणाष को याद किया है।दूसरी कोटि की लम्बी कविताएं वे है जो नाटकीय होते है।दूसरा उदाहरण मुक्तिबोध की लम्बी कविता ष्अंधेरे मेंष को याद किया है।उन्होंने प्रगीतात्मक लम्बी कविताओं का एक दूसरा वर्ग भी बनाया है। जिसकी संरचना वर्तुलाकार के बजाय सर्पिल(स्पाइरल) है और वह अपने भावबोध में प्रगीतात्मक के बावजूद निर्वेयक्तिक है। इसमें उन्होंने राजकमल चौधरी के मुक्ति प्रसंग को रखा है।इसी प्रकार नाटकीय कविताओं में एक वर्ण उन लम्बी कविता का बनाया है जो अपनी काव्यानुभूति में ष्आत्मपरकता का आभासष देती है।लेकिन उसकी संरचना अप्रगीतात्मक है।इसके उदारण रूप में श्री कांत वर्मा की ष्समाधिलेखष और रधुवीर सहाय की लम्बी कविता ष्आत्महत्या के विरूद्धष को रखा है।

डॉ. नरेन्द्र वशिष्ट ने एक ओर आख्यानधर्मी प्रबंधात्मक लंबी कविता की बात की है और दूसरी ओर उन्होंने लम्बी कविताओं को काल के आधार पर विभाजित किया है। उन्होंने काल के आधार पर लम्बी कविता को दो प्रकार का बताया है-काल प्रवाह को सीधे रेखांकित करने वाला तथा उसको विच्छिन्न करके विपयर्य बोध जगाने वाला। अंग्रेजी में पहले को लाइनीयर तथा दूसरे को फ्यूगल कहा जाता है। लाइनीयर फार्म काल क्रम की रक्षा करती है जबकि फ्यूगल फार्म काल धारा को चेतना प्रवाह ,स्वप्न, फैंटेसी तथा मिथक द्वारा खंड़ित करके उसे पारे की तरह बिखरा देती है। ऐसे फार्म का काल बोध समाप्त हो जाता है तथा भूत ,वर्तमान ,भविष्य आपस में घुलते – मिलते प्रतीत होते है।

छायावाद से लेकर अब तक हिन्दी में लम्बी कविताओं की संख्या पचास से ऊपर पहुँच गई है और अभी भी इसकी संख्या में काफी तेजी से वृद्धि हो रही है।कालक्रम के अनुसार प्रमुख लम्बी कविता के विकास को इस रूप में देखा जा सकता है-

कवि	कविता संग्रहध्यत्रिका	लम्बी कविता
सुमित्रानंदन पंत	पल्लव(सन् 1923)	परिवर्तन
जयशंकर प्रसाद	लहर(सन् 1933)	प्रलय की छाय
निराला	अनामिका (सन् 1937द्ध	राम की शक्तिपुजा, सरोज स्मृति, शिवाजी का पत्र आदि।
नरेश मेहता	दूसरा सप्तक(सन् 1951)	समय देवता
धर्मवीर भारती	सात गीत वर्ष(1959)	प्रमथ्यु गाथा
अज्ञेय	आँगन के पार द्वार(1961)	असाध्यवीणा
मुक्तिबोध	चाँद का मुँह टेढ़ा है(1964)	अंधेरे में, ब्रह्मराक्षस
विजय देव नारायण साही	मछलीघर;1966)	अलविदा
राजकमल चौधरी	मुक्तिप्रसंग(1966)	मुक्तिप्रसंग(1966)

रघुवीर सहाय	आत्महत्या के विरूद्ध(1967)	आत्महत्या के विरूद्ध
श्रीराम वर्मा	नई कविता-(1966-67)	शब्दों की शताब्दी
सौमित्र मोह	कृत्ति परिचय(1968)	लुकमान अली
भारत भूषण अग्रवाल	आलोचना	चीर फाड़
रामदरश मिश्र	पक गई धूप(1969)	फिर वही लोग
प्रमोद सिन्हा	तलघर(1970)	तलघर
धूमिल	संसद से सड़क तक(1972)	पटकथा, मोचीराम
लीलाधर जुगड़ी	नाटक जारी है(1972)	नाटक जारी है
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	कुआनो नदी(1972)	कुआनो नदी
रमेश गौड़	लहर (1979)	एक मामूली आदमी का बयान
बलदेव बंशी	उपनगर में वापसी (1974)	उपनगर में वापसी
त्रिलोचन	आलोचना(1973)	नगई मेहरा
स्वदेश भारती	आवजों के कटघरे में (1975)	आवजों के कटघरे में
नागार्जुन	खिचड़ी विप्लव देखा हमने (1977)	हरिजन गाथा
केदारनाथ सिंह	उत्तर कबीर ,बाघ	उत्तर कबीर ,बाघ
डॉ. नरेन्द्र मोहन	एक अग्निकांड़ जगहें बदलता	एक अग्निकांड़ जगहें बदलता
विनय		यात्रा के बीच में(1983)

छायावादी कवियों ने जिस प्रकार नाटकीयता,द्वन्द्व,तनाव आदि को कविता के कथ्य में रचा ,वह इस युगीन लंबी कविताओं की मुख्य उपलब्धि है। छायावाद युगीन लम्बी कविताओं में निराला का योगदान सबसे ज्यादा है। लम्बी कविताओं की संख्या, उनके कथ्य और शिल्प की विविधता सभी दृष्टियों से। निराला की सरोज स्मृति लम्बी कविता की दूसरी सीढी है जिसमें कवि ने पौराणिक-ऐतिहासिक कथा को छोड़ दिया और वैयक्तिक अनुभूतियों को अपने कविता में स्थान दिया।

छायावाद के बाद नयी कविता के दौर में अज्ञेय और मुक्तिबोध की कविताओं ने लोगों और आलोचकों का ध्यान खींचा।अज्ञेय ने असाध्यवीणा की रचना की, जो एक जापानी लोक कथापर आधारित है। जिसमें सृजन-प्रक्रिया से जुड़े कवि की वैचारिकता स्पष्ट होती है। लम्बी कविताओं के विकास में मुक्तिबोध का विशेष योगदान है। ब्रह्मराक्षस, अंधेरे में, चम्बल की घाटी में, एक भूतपूर्व विद्रोही का आत्मकथा आदि उनकी महत्वपूर्ण लम्बी कविता है।

साठोत्तरी हिन्दी काव्य से लेकर अब तक जिन लम्बी कविताओं का विशेष रूप से योगदान माना जाता है उनमें विजयदेव नारायण साही की ‘अलविदा’ राजकमल चौधरी की ‘मुक्तिप्रसंग’, रघुवीर की ‘आत्महत्या के विरूद्ध’ ,सौमित्र मोहन की लुकमान अली’ ,धूमिल की ‘पटकथा’, लीलाधर जुगड़ी की ‘नाटक जारी है’, सर्वेश्वर दयाल की ‘कुआनो नदी’, नागार्जुन की ‘हरिजन गाथा’, केदार नाथ सिंह की ‘उत्तर कबीर’ और ‘बाघ’ ,रामदरश मिश्र की ‘फिर वही लोग’ ,नरेन्द्र मोहन की ‘एक अग्निकांड़ जगहें बदलता’, विनय की ‘यात्रा के बीच में’ आदि के नाम लिये जा सकते है।

साही की कविता ‘अलविदा’ में स्वतंत्र्योत्तर भारत की राष्ट्रीय और सामाजिक विद्रुपताओं का नंगा चित्र है हमें देखने को मिलता है।राजकमल चौधरी की ‘मुक्तिप्रसंग’ में राजनीतिक पतन शीलता को ही नहीं अपितु कवि की शारीरिक और मानसिक यातानाएँ भी खुली है।‘लुकमान अली’ में वैयक्तिक व्यापारों एवं चरित्रगत विशेषताओं की प्रस्तुति से युग-जीवन के तीखे अहसास क्यक्त किये गए है।रामदरश मिश्र ने ‘फिर वही लोग’ में सड़क को केंद्र में रखकर समकालीन जीवन और राजनीति की विसंगतियों विडबनाओं और विद्रुपताओं का चित्रण किया है।यहाँ सड़क आज सारी अनीतियों और अत्याचारों का गवाह है।नरेन्द्र मोहन की लम्बी कविता ‘एक अग्नि कांड़ जगहें बदलता’ विभाजन की त्रासदी पर आधारित है । विनय की लम्बी कविता ‘यात्रा के बीच में’ मानवीय रिश्तों के बीच घटित दुर्घटनाओं की ओर इशारा करती है।

सहायक पुस्तकेंरू.

डॉ.नरेन्द्र मोहन,लंबी कविताओं का रचना विधान, द मेंक मिलन कम्पनी ऑफ इंडिया,नई दिल्ली ,प्रथम संस्करण ,1977

डॉ. युद्धवीर धवन,समकालीन लम्बी कविता की पहचान,संजीव प्रकाशन 1987

डॉ. प्रभाकर क्षोत्रीय-कालयात्री है कविता,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली 1993

डॉ. बलदेव बंशी-लंबी कविताएँ वैचारिक सरोकार,वाणी प्रकाशन

डॉ.रमेश कुन्तल मेघ-क्योंकि समय भी एक शब्द है ,लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली 2007